UP Board Notes for Class 10 Hindi Chapter 9 जीवन-सूत्राणि (संस्कृत-खण्ड)

किंस्विद् गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात् ?
किंस्विद् शीघ्रतरं वातात् किंस्विद् बहुतरं तृणात् ? ॥1॥
माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा ।।
मनः शीघ्रतरं वातात् चिन्ता बहुतरी तृणात् ॥2॥ **[2009, 13, 15]**

[किंस्विद् = क्या। गुरुतरं = अधिक भारी। उच्चतरं = ऊँचा है। खात् = आकाश से। वातात् = वायु . से। तृणात् = तिनके से।।

सन्दर्भ–प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी के संस्कृत-खण्ड के जीवन-सूत्राणि पाठ से उद्धृत है।

[**विशेष**—इस पाठ के समस्त श्लोकों के लिए भी यही सन्दर्भ प्रयुक्त होगा।] | प्रसंग-इन श्लोकों में यक्ष के प्रश्नों और युधिष्ठिर के उत्तरों के माध्यम से माता-पिता इत्यादि के महत्त्व को दर्शाया गया है।

अनुवाद-(यक्ष युधिष्ठिर से पूछता है) भूमि से महान् क्या है आकाश से ऊँचा कौन है ? वायु से अधिक शीघ्रगामी क्या है ? तिनके से अधिक दुर्बल (क्षीण) बनाने वाली क्या है ?

(युधिष्ठिरं उत्तर देता है) पृथ्वी से अधिक भारी माता है। आकाश से अधिक ऊँचा पिता है। वायु से अधिक शीघ्रगामी मन है। तृण से अधिक दुर्बल बनाने वाली चिन्ता है।

किंस्वित् प्रवसतो मित्रं किंस्विन् मित्रं गृहे सतः? ।
आतुरस्य च किं मित्रं किंस्विन् मित्रं मरिष्यतः ?॥3॥
सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः ।
आतुरस्य भिषक् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः ॥4॥ **[2012, 17]**

[प्रवसतः = विदेश में रहने वाले का। सतः = होना। आतुरस्य = रोगी का। मरिष्यतः = मरते हुए का। अर्थः = धन। भिषक् = वैद्य।।

प्रसंग-इन श्लोकों में विभिन्न व्यक्तियों के मित्रों के विषय में बताया गया है।

अनुवाद (यक्ष)-प्रवास में रहने वाले का मित्र कौन है ? घर में रहने वाले का मित्र कौन है ? " रोगी का मित्र कौन है ? मरने वाले का मित्र कौन है ?

(युधिष्ठिर)-प्रवास में रहने वाले का मित्र या साथी धन होता है। घर में रहने वाले का मित्र पत्नी होती है। रोगी का मित्र वैद्य होता है। मरने वाले का मित्र दान होता है।

किंस्विदेकपदं धर्म्य किंस्विदेकपदं यशः?
किंस्विदेकपदं स्वर्यं किंस्विदेकपदं सुखम् ? ॥ 5 ॥
दाक्ष्यमेकपदं धर्मं दानमेकपदं यशः।
सत्यमेकपदं स्वर्यं शीलमेकपदं सुखम् ॥ 6 ॥ **[2012]**

[एकपदं = एकमात्र। दाक्ष्यम् = योग्यता, चतुरता।].

प्रसंग-इन श्लोकों में धर्म और सुखादि को परिभाषित किया गया है।

अनुवाद—(यक्ष)-एकमात्र धर्म क्या है ? एकमात्र यश क्या है ? एकमात्र स्वर्ग दिलाने वाला क्या है ? एकमात्र सुख क्या है ?

(युधिष्ठिर) –दक्षता (योग्यता) एकमात्र धर्म है। दान एकमात्र यश है। सत्य एकमात्र स्वर्ग दिलाने वाला है। सदाचार एकमात्र सुख है।

धान्यानामुत्तमं किंस्विद् धनानां स्यात् किमुत्तमम् ?
लाभानामुत्तमं किं स्यात् सुखानां स्यात् किमुत्तमम् ? ॥7॥
धान्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम् ।
लाभानां श्रेयमारोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा ॥8॥ **[2010, 11, 18]**

[धान्यानाम् = अन्नों में। दाक्ष्यं = चतुरता, निपुणता। श्रुतम् = शास्त्र-ज्ञान। श्रेय = श्रेष्ठ। तुष्टिः = सन्तोष।]

प्रसंग-इन श्लोकों में अन्न, धन और सुखादि की उत्तमता पर प्रकाश डाला गया है।

अनुवाद–(यक्ष)–अन्नों में उत्तम क्या है ? धनों में उत्तम क्या है ? लाभों में उत्तम क्या है ? सुखों में उत्तम क्या है ?

(युधिष्ठिर)–अन्नों में उत्तम निपुणता है। धनों में श्रेष्ठ शास्त्र-ज्ञान है। लाभों में श्रेष्ठ नीरोगिता है। सुखों में श्रेष्ठ सन्तोष है।

किं नु हित्वा प्रियो भवति किन्नु हित्वा न शोचति ?
किं नु हित्वार्थवान् भवति किन्नु हित्वा सुखी भवेत्? ॥9॥
मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा ने शोचति।
कामं हित्वार्थवान् भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत् ॥10॥ **[2009, 12, 16, 17, 18]**

[मानं = अहंकार। हित्वा = त्यागकर। शोचति = शोक करता है। कामं = इच्छा को।]

प्रसंग-इन श्लोकों में विभिन्न त्यागों के महत्त्व को दर्शाया गया है।

अनुवाद-(यक्ष)-मनुष्य क्या छोड़कर प्रिय हो जाता है ? मनुष्य क्या छोड़कर शोक नहीं करता है ? मनुष्य क्या छोड़कर धनवान् हो जाता है ? मनुष्य क्या छोड़कर सुखी होता है ?

https://www.evidyarthi.in/

(युधिष्ठिर)–मनुष्य अहंकार को छोड़कर प्रिय हो जाता है। मनुष्य क्रोध को छोड़कर शोक नहीं करता है। मनुष्य इच्छा (कामना) को छोड़कर धनवान् हो जाता है। मनुष्य लोभ को छोड़कर सुखी हो जाता है।